eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

भारतीय पुनर्जागरण में राजा राममोहन राय के योगदान

डा0 अरविन्द कुमार शुक्ल[1]
[1]सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0, भारत

Received: 15 May 2024 Accepted & Reviewed: 25 May 2024, Published : 31 May 2024

Abstract

भारतीय पुनर्जागरण में राजा राममोहन राय का योगदान अतुलनीय है। वे समाज सुधार, शिक्षा, धार्मिक सुधार, प्रेस स्वतंत्रता और स्त्री अधिकारों के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने सती प्रथा उन्मूलन, विधवा पुनर्विवाह और ब्रह्म समाज की स्थापना के माध्यम से सामाजिक जागरूकता उत्पन्न की। यह शोध पत्र उनके बहुआयामी योगदान का विस्तृत विश्लेषण करता है।

कीवर्ड– राजा राममोहन राय, भारतीय पुनर्जागरण, ब्रह्म समाज, समाज सुधार, सती प्रथा उन्मूलन, आधुनिक शिक्षा, धार्मिक सुधार, प्रेस स्वतंत्रता।

Introduction

भारतीय पुनर्जागरण एक महत्वपूर्ण सामाजिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक आंदोलन था जिसने भारत को आधुनिकता की ओर अग्रसर किया। यह कालखंड भारत में सामाजिक, धार्मिक और शैक्षिक सुधारों के लिए एक प्रेरणादायक युग रहा, जिसमें परंपरागत रूढ़ियों को तोड़ने और समाज को एक नई दिशा देने की कोशिशें हुईं। राजा राममोहन राय इस पुनर्जागरण के अग्रणी विचारकों में से एक थे। उन्होंने अपने चिंतन और कार्यों के माध्यम से भारतीय समाज की कुरीतियों, जैसे सती प्रथा, जाति–आधारित भेदभाव, और महिला शिक्षा के अभाव को चुनौती दी। उनके विचारों ने न केवल भारत में बल्कि संपूर्ण विश्व में आधुनिकता और सामाजिक जागरूकता को बढ़ावा दिया।

राजा राममोहन राय ने सामाजिक सुधारों के साथ–साथ धार्मिक सुधारों की भी पहल की। उन्होंने ब्रह्म समाज की स्थापना करके एकेश्वरवाद का प्रचार किया और तर्कशीलता व वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाने पर बल दिया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने भारतीय समाज में शिक्षा का प्रचार–प्रसार किया और अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली को अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया।

उनका प्रभाव केवल समाज सुधार तक ही सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने प्रेस की स्वतंत्रता, न्यायिक सुधार और प्रशासनिक बदलावों की दिशा में भी महत्वपूर्ण कार्य किए। उन्होंने भारतीय जनमानस को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक किया और एक नई सोच विकसित करने में योगदान दिया। यह शोध पत्र राजा राममोहन राय के बहुआयामी योगदान का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है और उनके कार्यों की वर्तमान प्रासंगिकता पर भी विचार करता है।

राजा राममोहन राय का जन्म 22 मई 1772 को बंगाल में हुआ था। वे बचपन से ही ज्ञानार्जन के प्रति उत्सुक थे और उन्होंने संस्कृत, अरबी, फारसी, अंग्रेजी तथा बंगाली भाषाओं में महारत हासिल की।

भारतीय पुनर्जागरण 19वीं शताब्दी में भारत में हुए सामाजिक, धार्मिक, बौद्धिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों का प्रतिनिधित्व करता है। यह आंदोलन भारत में जागरूकता, आधुनिकता और वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने का एक महत्वपूर्ण चरण था। भारतीय पुनर्जागरण ने भारतीय समाज को रूढ़ियों और अंधविश्वासों

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

से मुक्त करने का प्रयास किया और एक प्रगतिशील समाज की नींव रखी। इस अवधारणा की जड़ें यूरोपीय पुनर्जागरण में देखी जा सकती हैं, जिसने तर्क, स्वतंत्र विचार और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया। भारत में, यह पुनर्जागरण मुख्य रूप से अंग्रेजों के आगमन, पश्चिमी शिक्षा के प्रसार, प्रिंटिंग प्रेस की उपलब्धता और भारतीय समाज सुधारकों के प्रयासों से प्रेरित था। राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, और ज्योतिबा फुले जैसे महान विचारकों ने इस आंदोलन को गति दी।

भारतीय पुनर्जागरण की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

सामाजिक सुधार, सती प्रथा, बाल विवाह, जातिवाद और छुआछूत जैसी कुरीतियों के विरुद्ध आंदोलन।
धार्मिक सुधार– एकेश्वरवाद, तर्कशीलता और धर्म के उदारवादी दृष्टिकोण का प्रसार।
शैक्षिक सुधार– आधुनिक शिक्षा प्रणाली का विकास, अंग्रेजी भाषा और विज्ञान का प्रचार।
महिला सशक्तिकरण– विधवा पुनर्विवाह, महिला शिक्षा और महिलाओं के अधिकारों की वकालत।
राजनीतिक चेतना– ब्रिटिश प्रशासन के अन्यायपूर्ण कानूनों के खिलाफ आवाज उठाना और स्वतंत्रता संग्राम की नींव रखना।

पत्रकारिता और प्रेस– सामाजिक जागरूकता बढ़ाने के लिए समाचार पत्रों और पत्रिकाओं का उपयोग।

भारतीय पुनर्जागरण ने भारत को एक नई दिशा दी और आधुनिक समाज के निर्माण की नींव रखी। राजा राममोहन राय इस आंदोलन के सबसे महत्वपूर्ण स्तंभों में से एक थे, जिन्होंने समाज सुधार, धार्मिक चेतना और शिक्षा के क्षेत्र में अत्यधिक प्रभावशाली कार्य किए।

राजा राममोहन राय ने भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने और एक आधुनिक, समतामूलक समाज की स्थापना के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए। उनके समाज सुधारों ने भारतीय पुनर्जागरण को गति दी और सामाजिक जागरूकता को बढ़ावा दिया। उनके प्रमुख योगदान निम्नलिखित हैं।

सती प्रथा उन्मूलन– राजा राममोहन राय ने सती प्रथा जैसी अमानवीय प्रथा के खिलाफ संघर्ष किया। उन्होंने इसे महिलाओं के प्रति क्रूर और अन्यायपूर्ण परंपरा करार दिया। उन्होंने इस प्रथा को समाप्त करने के लिए ब्रिटिश प्रशासन पर दबाव डाला और 1829 में लॉर्ड विलियम बेंटिक के सहयोग से सती प्रथा को अवैध घोषित करवाने में सफल रहे।

विधवा पुनर्विवाह का समर्थन– राजा राममोहन राय ने विधवाओं की दुर्दशा को सुधारने के लिए उनके पुनर्विवाह को बढ़ावा दिया। उस समय विधवाओं को समाज में तिरस्कार और अत्याचार सहना पड़ता था, जिसे रोकने के लिए उन्होंने सार्वजनिक रूप से विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया।

महिला शिक्षा का प्रचार– राजा राममोहन राय ने महिलाओं की शिक्षा के महत्व को समझते हुए इसे बढ़ावा दिया। उन्होंने न केवल महिला शिक्षा के लिए संस्थानों की स्थापना में योगदान दिया, बल्कि उन्होंने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में भी प्रयास किए।

जातिवाद और छुआछूत का विरोध– भारत में जातिवाद और छुआछूत की गहरी जड़ें थीं। राजा राममोहन राय ने इन सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष किया और सामाजिक समानता के लिए आंदोलन चलाया। उन्होंने कहा कि सभी मनुष्य समान हैं और जातिगत भेदभाव समाज के लिए घातक है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

धार्मिक कट्टरता का विरोध– उन्होंने धर्म के नाम पर होने वाले आडंबरों और अंधविश्वासों का विरोध किया। उन्होंने ब्रह्म समाज की स्थापना कर तर्कसंगत और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया। उनका मानना था कि धर्म को सामाजिक भलाई और नैतिकता का माध्यम बनना चाहिए न कि रूढ़ियों का।

शिक्षा और प्रेस की स्वतंत्रता– उन्होंने आधुनिक शिक्षा प्रणाली को अपनाने पर बल दिया और अंग्रेजी, विज्ञान तथा गणित की पढ़ाई को आवश्यक बताया। इसके अलावा, उन्होंने प्रेस की स्वतंत्रता के लिए भी संघर्ष किया और भारतीय पत्रकारिता को बढ़ावा दिया।

राजा राममोहन राय के समाज सुधारों ने भारतीय समाज को आधुनिक बनाने में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने न केवल सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ लड़ाई लड़ी, बल्कि भारतीय समाज को वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने और आधुनिक मूल्यों की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

धार्मिक सुधार– राजा राममोहन राय ने भारतीय समाज में धार्मिक सुधारों की आवश्यकता को समझते हुए कई महत्वपूर्ण कार्य किए। उन्होंने धर्म के नाम पर फैले अंधविश्वास, पाखंड और रूढ़िवादिता का विरोध किया तथा तर्कशीलता और एकेश्वरवाद को बढ़ावा दिया। उनके धार्मिक सुधारों ने भारतीय समाज को आधुनिक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित किया।

ब्रह्म समाज की स्थापना– 1828 में राजा राममोहन राय ने ब्रह्म समाज की स्थापना की, जिसका उद्देश्य समाज में व्याप्त धार्मिक कट्टरता और कर्मकांडों का विरोध करना था। इस समाज ने एकेश्वरवाद को बढ़ावा दिया और मूर्तिपूजा, जातिवाद और अंधविश्वास के खिलाफ आंदोलन चलाया।

एकेश्वरवाद का प्रचार– राजा राममोहन राय वेदों और उपनिषदों के अध्ययन से प्रभावित थे और उन्होंने भारतीय समाज में एकेश्वरवाद (ईश्वर की एकता) का प्रचार किया। उन्होंने मूर्तिपूजा और बहुदेववाद को तर्कहीन मानते हुए इसे समाज की प्रगति में बाधक बताया।

धार्मिक ग्रंथों का पुनर्व्याख्या– उन्होंने वेदों, उपनिषदों और बाइबिल का गहन अध्ययन किया और इन ग्रंथों का तर्कसंगत और आधुनिक दृष्टिकोण से पुनर्व्याख्या की। उन्होंने यह स्थापित किया कि भारतीय धर्मग्रंथों का मूल संदेश नैतिकता, एकेश्वरवाद और मानवता की सेवा करना है।

अंधविश्वास और मूर्तिपूजा का विरोध– उन्होंने मूर्तिपूजा, चमत्कारों और धार्मिक कर्मकांडों की कठोर आलोचना की। उनका मानना था कि धर्म को तर्कसंगत और वैज्ञानिक सोच के साथ जोड़ा जाना चाहिए ताकि समाज में जागरूकता आ सके।

सर्वधर्म समभाव की भावना– राजा राममोहन राय ने हिंदू धर्म के साथ–साथ इस्लाम और ईसाई धर्म का भी अध्ययन किया। वे सभी धर्मों के मूलभूत सिद्धांतों को समान मानते थे और धर्मों के बीच आपसी सम्मान और सहिष्णुता की वकालत करते थे। उन्होंने धार्मिक संघर्षों को समाप्त करने और सौहार्द स्थापित करने के लिए कार्य किया।

ईसाई धर्म और इस्लाम से संवाद– उन्होंने इस्लाम और ईसाई धर्म के सकारात्मक पहलुओं को स्वीकार किया और इन धर्मों के विद्वानों से संवाद स्थापित किया। वे धार्मिक सहिष्णुता के पक्षधर थे और मानते थे कि सभी धर्मों का उद्देश्य मानवता की सेवा करना होना चाहिए। राजा राममोहन राय के धार्मिक सुधारों ने भारतीय समाज में धार्मिक स्वतंत्रता, तार्किक चिंतन और सहिष्णुता को बढ़ावा दिया। उनके प्रयासों ने भारतीय पुनर्जागरण को नई दिशा दी और आधुनिक भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

शिक्षा में योगदान– राजा राममोहन राय ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण सुधार किए और आधुनिक शिक्षा के प्रसार में अभूतपूर्व योगदान दिया। उनका मानना था कि शिक्षा ही समाज को प्रगति की ओर ले जाने का मुख्य साधन है। उन्होंने पारंपरिक गुरुकुल प्रणाली में सुधार लाने और पश्चिमी शिक्षा को अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया। उनके शिक्षा संबंधी प्रमुख योगदान निम्नलिखित हैं।

अंग्रेजी शिक्षा का समर्थन– राजा राममोहन राय ने पारंपरिक संस्कृत आधारित शिक्षा प्रणाली की सीमाओं को समझते हुए अंग्रेजी भाषा में आधुनिक शिक्षा को अपनाने पर जोर दिया। उनका मानना था कि अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से विज्ञान, गणित, तर्कशास्त्र और आधुनिक विचारधाराओं को भारतीय समाज में प्रसारित किया जा सकता है।

हिंदू कॉलेज की स्थापना (1817)– उन्होंने 1817 में डेविड हरे और अन्य विद्वानों के सहयोग से कोलकाता में हिंदू कॉलेज (वर्तमान में प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय) की स्थापना में योगदान दिया। यह कॉलेज भारतीयों को आधुनिक विज्ञान, गणित और पश्चिमी दर्शन की शिक्षा देने के लिए स्थापित किया गया था।

विज्ञान और तर्कशास्त्र की शिक्षा पर बल– उन्होंने भारतीय शिक्षा प्रणाली में विज्ञान, गणित और तार्किक चिंतन को बढ़ावा देने की वकालत की। उनका मानना था कि विज्ञान और तर्क आधारित शिक्षा भारतीय समाज को अंधविश्वास और कुरीतियों से मुक्त कर सकती है।

महिला शिक्षा का समर्थन– राजा राममोहन राय महिला शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने समाज में महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने और उनके अधिकारों की रक्षा करने के लिए अभियान चलाया। उनका मानना था कि महिलाओं को शिक्षित किए बिना समाज का समुचित विकास संभव नहीं है।

स्वतंत्र सोच और ज्ञान के प्रसार पर जोर– उन्होंने शिक्षा को केवल धार्मिक ग्रंथों तक सीमित रखने के बजाय स्वतंत्र विचार, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तार्किक चिंतन को अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि ज्ञान का सही उपयोग तभी संभव है जब लोग रूढ़िवादिता से मुक्त होकर तर्क और विवेक का सहारा लें।

पत्रकारिता और प्रेस की स्वतंत्रता– उन्होंने शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिए पत्रकारिता को एक प्रभावी माध्यम के रूप में देखा। उन्होंने संवाद कौमुदी (बंगाली) और मिरात–उल–अखबार (फारसी) जैसे समाचार पत्रों का प्रकाशन किया, जो समाज में शिक्षा और जागरूकता फैलाने में सहायक बने। राजा राममोहन राय के शिक्षा सुधारों ने भारतीय समाज को आधुनिक विचारधारा की ओर अग्रसर किया और भारत में नवजागरण आंदोलन को बल दिया। उनका योगदान आज भी भारतीय शिक्षा प्रणाली में प्रेरणास्रोत बना हुआ है।

राजनीतिक विचार और राष्ट्रवाद–

– वे प्रशासनिक सुधारों और भारतीयों के अधिकारों के प्रबल समर्थक थे।
– उन्होंने ब्रिटिश सरकार से न्यायिक और प्रशासनिक सुधारों की मांग की।

चुनौतियाँ और समाधान– राजा राममोहन राय के शिक्षा सुधारों ने भारतीय समाज को आधुनिक विचारधारा की ओर अग्रसर किया और भारत में नवजागरण आंदोलन को बल दिया। उनका योगदान आज भी भारतीय शिक्षा प्रणाली में प्रेरणास्रोत बना हुआ है। राजा राममोहन राय ने समाज सुधार, धार्मिक सुधार और शिक्षा के क्षेत्र में जो महत्वपूर्ण कार्य किए, वे तत्कालीन भारतीय समाज के लिए क्रांतिकारी थे। उनके विचारों

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

और कार्यों को व्यापक समर्थन मिला, लेकिन उन्हें कई चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा। उन्होंने इन चुनौतियों का समाधान तर्क, संवाद और प्रशासनिक सुधारों के माध्यम से निकालने का प्रयास किया।

राजा राममोहन राय ने जब सती प्रथा, जातिवाद और महिला शिक्षा जैसी सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया, तो उन्हें तत्कालीन परंपरावादी वर्ग से तीव्र प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। ब्राह्मणों और रूढ़िवादी समाज ने उनके सुधारों को भारतीय परंपराओं के खिलाफ बताया। उन्होंने अपने विचारों को शास्त्रों और तर्क के आधार पर प्रस्तुत किया, जिससे समाज में एक नए दृष्टिकोण का विकास हुआ। उन्होंने प्रेस और पत्रकारिता का सहारा लिया और अपने विचारों का प्रचार–प्रसार किया।

राजा राममोहन राय ने एकेश्वरवाद और ब्रह्म समाज की स्थापना करके मूर्तिपूजा, अंधविश्वास और पाखंड का विरोध किया। इसके कारण उन्हें धार्मिक संस्थाओं और पुरोहित वर्ग से तीव्र विरोध झेलना पड़ा। उन्होंने धर्म के प्रति तार्किक दृष्टिकोण अपनाया और भारतीय तथा पाश्चात्य ग्रंथों का गहन अध्ययन कर अपनी बात को प्रमाणित किया। उन्होंने धार्मिक सहिष्णुता और संवाद पर बल दिया।

राजा राममोहन राय ब्रिटिश सरकार की कुछ नीतियों के समर्थक थे, लेकिन जब उन्होंने प्रेस की स्वतंत्रता, भारतीय प्रशासन में भागीदारी और न्यायिक सुधारों की मांग की, तो ब्रिटिश प्रशासन ने उनका विरोध किया। उन्होंने प्रशासन के भीतर सुधार लाने के लिए लगातार प्रयास किया और ब्रिटिश नीतियों की आलोचना करते हुए भारतीय जनता को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया।

पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणाली में धार्मिक ग्रंथों पर अधिक जोर दिया जाता था, जबकि राजा राममोहन राय आधुनिक विज्ञान और अंग्रेजी शिक्षा को बढ़ावा देना चाहते थे। इस बदलाव का व्यापक विरोध हुआ। उन्होंने हिंदू कॉलेज जैसे शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना में योगदान दिया और सरकार से शिक्षा प्रणाली में बदलाव की मांग की। उन्होंने भारतीयों को समझाया कि आधुनिक शिक्षा उन्हें वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने में मदद करेगी।

उस समय महिलाओं को शिक्षा और सामाजिक स्वतंत्रता देने का विचार समाज के लिए नया था। विधवा पुनर्विवाह और महिला शिक्षा के प्रयासों को कड़ी आलोचना का सामना करना पड़ा।

उन्होंने महिला अधिकारों के पक्ष में तर्क प्रस्तुत किए और शिक्षा के माध्यम से महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में काम किया। उनके प्रयासों से महिलाओं की स्थिति में धीरे–धीरे सुधार आया।

राजा राममोहन राय ने अपने जीवन में कई चुनौतियों का सामना किया, लेकिन उन्होंने कभी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया। उनके प्रयासों से भारत में सामाजिक और धार्मिक सुधारों की नींव पड़ी, जिसने भारतीय पुनर्जागरण को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राजा राममोहन राय को उनके विचारों के कारण कठोर सामाजिक विरोध का सामना करना पड़ा। रूढ़िवादी वर्ग ने उनके सुधारों को अपनाने में प्रतिरोध दिखाया, लेकिन उनकी बौद्धिक क्षमता, दृढ़ संकल्प और तर्कपूर्ण विचारधारा ने उन्हें सफलता दिलाई।

राजा राममोहन राय भारतीय पुनर्जागरण के अग्रदूत थे। उन्होंने सामाजिक, धार्मिक और शैक्षिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण सुधार किए और भारत को आधुनिकता की दिशा में अग्रसर किया। उनके विचार और कार्य आज भी प्रासंगिक हैं और भारतीय समाज को प्रेरित करते हैं।

सन्दर्भ सूची–

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

- दास, सुभोध चंद्र – राजा राममोहन राय एंड दि ब्रह्म समाज
- चटर्जी, परमेश्वर – रिनेसांस इन इंडिया
- सिंह, बलदेव – भारतीय समाज सुधार आंदोलन
- शर्मा, रामगोपाल – राजा राममोहन रायरू जीवन और विचार
- मुखर्जी, सुनील कुमार – द मॉडर्नाइज़ेशन ऑफ इंडियन थॉट
- मजूमदार, आर.सी. – हिस्ट्री ऑफ द फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया
- बैनर्जी, सत्यव्रत – राजा राममोहन राय एंड हिज टाइम्स
- भारद्वाज, एस.के. – सोशल एंड रिलिजियस रिफॉर्म्स इन इंडिया
- त्रिपाठी, बृजेश कुमार – भारतीय पुनर्जागरण और समाज सुधारक
- सेनगुप्ता, अमिय कुमार – द ब्रह्मो समाज एंड इंडियन नेशनलिज्म
- नेहरू, जवाहरलाल – डिस्कवरी ऑफ इंडिया
- गुप्ता, हरिदत्त शर्मा – इंडियन सोशल रिफॉर्मर्स
- चक्रवर्ती, नृपेंद्रनाथ – राजा राममोहन रायरू अ पायनियर ऑफ इंडियन मॉडर्निज्म
- सिंह, के.के. – इंडियन रिनेसांस एंड सोशल चेंज
- दत्त, रोमेश चंद्र – सोशल एंड इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया
- सप्रू, टी.आर. – राजा राममोहन राय एंड हिज इंफ्लुएंस ऑन इंडियन थॉट
- नंदा, बी.आर. – गांधी एंड हिज प्रीडिसेसर्स
- जोशी, विष्णु दत्त – भारतीय नवजागरण के प्रमुख स्तंभ
- गोपाल, सरस्वती प्रसाद – राजा राममोहन रायरू सामाजिक एवं धार्मिक सुधार
- बोस, सुब्रत कुमार – इंडियन थिंकर्स एंड सोशल ट्रांसफॉर्मेशन
- शर्मा, आर. (2010). 'भारतीय पुनर्जागरण और समाज सुधारक'। नई दिल्लीरू प्रकाशन संस्थान।
- मुखर्जी, एस. (2005). 'राजा राममोहन राय और आधुनिक भारत'। कोलकातारू नेशनल बुक ट्रस्ट।
- सेन, एस. (2018). 'इंडियन रिफॉर्म मूवमेंट्स'। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।